एपिसोड- - 46

जलवायु परिवर्तन पर रेडियो धारावाहिक

एपिसोड शीर्षक : बिगड़ी मौसम की चाल

अवधि : 27 मिनट **मुख्य शोध एव आलेख : श्रीनिवास ओली**

अनुवादक: श्रीमती सुकन्या दुत्ता

पात्र परिचय :

1 - महेंद्र : ग्राम प्रधान (60-65 वर्ष / भारी आवाज़)

2 - हेमा : महेंद्र की पत्नी

3- सविता : महेंद्र की बेटी (कॉलेज की छात्रा)

4- डॉ राजेश : वैज्ञानिक (भारी आवाज़)

5- मीना : अधेड़ ग्रामीण महिला

6- सूरज : ग्रामीण / युवा

SIGNATURE TUNE ……. FADE OUT

उद्घोषक : (Welcome + Recap + Intro) नमस्कार श्रोताओ। जलवायु परिवर्तन पर आधारित रेडियो धारावाहिक "ग्लोबल गर्मी" में आपका एक बार फिर से स्वागत है। श्रोताओ, साल-दर-साल बदलती जलवायु का असर अक्सर बेमौसमी बारिश, आंधी, बाढ़ और गर्म हवाओं के रूप में नजर आता है। दुनिया के दूसरे हिस्सों की तरह ही हमारे देश में भी अक्सर मौसम का चौंकाने वाला रूप दिखने लगा है। मौसम के इस बदले रुख को और करीब से समझने के लिए चलते हैं राजस्थान के एक गांव में, जहां लोग मौसम के बिगड़े रूप का सामने कर रहे हैं।

SIGNATURE TUNE

(SCENE-1)

(शाम का वक्त / महेंद्र का घर / गोशाला की टिन की छत पर ओले गिरने की आवाज़ / खिड़की दरवाजों से अंदर आती तेज हवा की आवाज़)

हेमा : **(हड़बड़ी भरे स्वर में)** देखिए जी, मैं कब से कह रही हूं कि गोशाला की छत बदलवा दीजिए। किसी दिन हवा में उड़ जाएगी, तभी आपको ध्यान आएगा।

महेंद्र : अरे, वो तो बाद की बात है..। अभी तो जल्दी से ये खिड़की और दरवाजे बंद करो। कितनी तेज हवा आ रही है। (हवा की सांय - सांय)

हेमा : हां... हां... आप बरामदे में रखा खाद का बैग अंदर रख लीजिए, नहीं तो खाद भीग कर खराब हो जाएगी। मैं ये खिड़कियां बंद कर देती हूं। (खिड़की बंद करने की आवाज़ के साथ ही टिन पर ओले गिरने और हवा का शोर कुछ कम हो जाता है)

महेंद्र : (खाद का बैग जोर से नीचे रखने की धम्म की आवाज़) ओह... । ये मौसम भी ना। अब तो इसका कुछ भी ठिकाना ही नहीं। कब कैसा रूप दिखा दे, कुछ भी भरोसा नहीं। बाहर से ये ये ओले उछल कर अंदर आ रहे हैं..। (खुद से / बुदबुदाते हुए) दरवाजा बंद नहीं किया तो अंदर भी भर जाएंगे। (दरवाजा बंद करने की आवाज़)

हेमा : सुबह के वक्त कितना अच्छा मौसम था। दोपहर होते - होते ही सब कुछ तेजी से बदलने लगा और और अब तो.. (तेजी से बिजली कड़कने की आवाज़)

महेंद्र : ये लो...। अब बिजली भी चली गई। अब तो शायद सुबह ही आएगी।

हेमा : सुनिये, जरा सविता को फोन लगाइये तो...। उसके पहुंचने का वक्त भी हो रहा है। हॉस्टल से तो वो दोपहर में ही निकल गई थी।

महेंद्र : हां, हां... मैं फोन मिलाता हूं। पहुंचने वाली ही होगी वो भी। मैंने तो कहा था कि मौसम खराब होने पर घर मत आना... लेकिन उसकी ज़िद के आगे क्या कहूं। (बुदबुदाते हुए) फोन पर घंटी तो जा रही है। (फोन पर घंटी जाने की आवाज़)

महेंद्र : (झुंझलाते हुए) ये लो...। मेरा मोबाइल फोन तो बंद ही हो गया। बैटरी खत्म ।

(लैंडलाइन फोन की घंटी बजती है / ट्रिंग-ट्रिंग)

हेमा : देखिए आखिर हमारा पुराना फोन काम आ गया ना। सविता का ही फोन होगा।

महेंद्र : (फोन पर बात करते हैं) हेलो... हां सविता, कहां पहुंची हो..? अच्छा... अच्छा...। ठीक है..। अपना ख्याल रखना। कोई जल्दबाजी मत करना। ठीक है ... ठीक है। ओके..। (लैंडलाइन फोन का रिसीवर रखने की आवाज़)

हेमा : क्या कह रही है सविता ?

महेंद्र : बस पहुंचने ही वाली है। कह रही है कि पांच-दस मिनट में घर पर पहुंच जाऊंगी।

हेमा : (खिड़की खोलने की आवाज़ / टिन पर ओले गिरने की आवाज़) ओले गिरने तो कुछ कम हुए हैं। शायद कुछ देर बाद बारिश और तूफान भी रुक जाए। (खिड़की बंद करने की आवाज़ / ओले गिरने की आवाज़ मंद पड़ती है)

महेंद्र : हां, लेकिन इस आंधी और ओलों ने जितना नुकसान करना था वो तो कर ही दिया। पता नहीं मौसम की हमसे क्या दुश्मनी हो गई है। कभी सूखा, कभी बाढ़ तो कभी ओले और आंधी।

हेमा : बिल्कुल सही कहा आपने। मैं तो हैरान हूं मौसम के मिजाज को देखकर। पहले तक होली के आसपास कितना अच्छा मौसम रहता था। ना सर्दी और ना गर्मी। लेकिन अब देखिये जरा...। पंद्रह - बीस सालों में ही कितना कुछ बदल गया है। हम खेती - किसानी वालों को तो और भी ज्यादा तकलीफ दे रहा है ये मौसम।

महेंद्र : तकलीफ तो सभी को हो रही है। सभी हैरान भी हैं और परेशान भी। अब करें भी क्या ? आज भी इन ओलों और तूफान ने कोई कम नुकसान थौड़ी पहुंचाया होगा। पूरे नुकसान का अंदाजा तो कल तक ही हो सकेगा। पता नहीं कहां-कहां कहर बनकर बरसे होंगे ये ओले ?

हेमा : कल तो पंचायत भवन में मीटिंग भी होने वाली थी। आप जाएंगे ना।

महेंद्र : हां.. सही याद दिलाया तुमने। मीटिंग में जाना तो जरूरी है। मीटिंग में कृषि विज्ञान केंद्र से भी कुछ लोग आने वाले हैं। बीडीओ साहब (Block Development Officer) तो रहेंगे ही। मौसम सही रहा तो मीटिंग जरूर होगी।

हेमा : तब तो आप खेती के नुकसान का मुद्दा जरूर उठाना। (हताशा भरा स्वर) कई महीनों की मेहनत पर कुछ ही घंटों में पानी फिर जाता है। कोई कुछ करेगा भी या नहीं ?

(दरवाजा खटखटाने की आवाज़)

महेंद्र : लगता है सविता पहुंच गई।

(पदचाप / दरवाजा खोलने की आवाज़)

हेमा : सविता...। तुम भी ना.. बस मानती नहीं हो। ऐसे मौसम में भी आने की क्या जरूरत थी?

महेंद्र : अरे, उसे अंदर तो आने दो। भीग गई होगी बेचारी।

सविता : हां पापाजी। जब ओले गिरने बंद हुए तभी मैंने घर का रुख किया। बस स्टैंड पर तो पहले ही पहुंच गई थी। ये छाता भी कोई काम नहीं आई। एक तो तेज हवा और ऊपर से बिजली भी गायब। रास्ते में कुछ पेड़ भी गिरे हुए दिख रहे थे। (दरवाजा बंद करने की आवाज़) वैसे अब तो मौसम ठीक हो गया है।

हेमा : ठीक है.. ठीक है..। अभी जल्दी से कपड़े बदल लो। वर्ना तबियत खराब हो जाएगी।

सविता : हां मम्मी..। मैं अभी आई...। और हो सके तो एक कप चाय भी बना दीजिए ...।

महेंद्र : चाय तो मैं भी पी लूंगा..। पहले जरा कल की मीटिंग के लिए जरूरी कागजात संभाल कर रख लूं।

हेमा : सही बात है, ग्राम प्रधान की जिम्मेदारी कोई मामूली बात तो नहीं है। (हल्की हंसी के साथ) आपके लिए भी बन जाएगी चाए..। आप अपनी तैयारी कीजिए और मुझे रात के खाने की तैयारी भी करनी है।

SCENE TRANSITION MUSIC

(SCENE -2)

(दोपहर का वक्त / गांव के लोग पंचायत भवन के बाहर खड़े हैं / ग्रामीणों का मिलाजुला शोर / बीच-बीच में बाइक के हॉर्न और साइकिल की घंटी की आवाज़)

सविता : पापाजी, कल के आंधी तूफान से तो बड़ा नुकसान हुआ है। ये पूरा पेड़ पंचायत भवन के ऊपर ही गिर पड़ा।

महेंद्र : हां सविता। इस तूफान ने तो हमारे गांव में बहुत नुकसान किया है।

मीना : प्रधान जी, मौसम की मार से तो पूरी खेती ही चौपट हो गई है। मैं तो इसीलिये मीटिंग में पहुंची हूं। लेकिन पंचायत भवन में तो बैठने लायक जगह ही नहीं बची है। सोच रही हूं घर को लौट जाऊं।

महेंद्र : नहीं नहीं.. आप यहीं रहिये। मीटिंग होगी तो सही, लेकिन सामने स्कूल में होगी। मेरी वहां के हेडटीचर से कल रात में ही बात हो गई थी। उन्होंने स्कूल में ही हमारी मीटिंग का इंतजाम कर दिया है। बीडीओ साहब पहले ही वहां पहुंच चुके हैं। कुछ ही देर में स्कूल की छुट्टी होने वाली है। फिर सभी लोग वहां चलेंगे।

मीना : आपने ये सही व्यवस्था कर दी प्रधान जी।

(स्कूल में छुट्टी की घंटी बजती है / कुछ दूरी से आती हुई आवाज़)

सविता : लीजिए छुट्टी भी हो गई। पापाजी, चलिये स्कूल में ही चलते हैं।

(पार्श्व में लोगों की बातचीत का स्वर / पदचाप)

महेंद्र : नमस्कार डॉक्टर साहब। कैसे हैं आप ? आपका कब आना हुआ ? बैठिये-बैठिये आप।

राजेश : मैं कुछ देर पहले ही पहुंचा हूं। बीडीओ साहब का भी यहां आने का प्रोग्राम था लेकिन उनको दूसरे गावों में जाना पड़ा। आपको तो पता ही है कि कल शाम आई आंधी और ओलों से कई जगह बहुत नुकसान हुआ है।

महेंद्र : जी... जी।

(कुर्सियां खिसकाने की आवाज़ / भीड़ का शोर)

महेंद्र : (कुछ ऊंचे स्वर में / संबोधित करते हुए) कृपया आप सभी लोग बैठ जाइये। शांत हो जाइये सभी लोग। (भीड़ का शोर मंद पड़ जाता है) हमारे बीच में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश जी हैं। पूरे गांव की ओर से मैं डॉक्टर साहब का स्वागत करता हूं। यूं तो हमारी ये बैठक कुछ दूसरे मसलों पर होनी थी लेकिन कल के खराब मौसम ने हमारी फसलों और संपत्ति को काफी नुकसान पहुंचाया है। आप लोग इस बारे में भी अपनी बातें रख सकते हैं।

मीना : (शिकायत भरे लहजे में) साहब, कभी - कभी हमें तो बदलते मौसम की जानकारी रेडियो से मिल जाती है। इस बार तो कुछ पता ही नहीं चला। मौसम का कुछ भरोसा नहीं, कब क्या हो जाए ?

डॉ राजेश : देखिये, मौसम का ये रूप सिर्फ इसी इलाके में नहीं बल्कि सभी जगह नजर आ रहा है। आप देख रहे होंगे कि हमारे प्रदेश राजस्थान के रेगिस्तान इलाके या तो सूखे से जूझ रहे हैं या फिर बाढ़ का सामना करने को मजबूर हैं। पिछले कुछ वर्षों से ऐसा ही चल रहा है।

मीना : हां, ये बात तो है।

राजेश : आप बाड़मेर का ही उदाहरण ले लीजिए। सन दो हजार पंद्रह (2015) में यहां के दो हजार से ज्यादा गांव सूखे की चपेट में थे लेकिन अगले ही साल यहां भीषण बारिश हो गई। सन दो हजार सोलह में इसी जिले में अक्टूबर के महीने में सामान्य से चार गुना ज़्यादा बारिश हो गई और बाढ़ आई। पिछले दौ सौ सालों में इसे राजस्थान की सबसे खतरनाक बाढ़ कहा जाता है।

महेंद्र : सही कहा डॉक्टर साहब आपने। एक तो मानसून सही वक्त पर नहीं आता और फिर बेमौसम बारिश से फसल की कटाई मुश्किल हो जाती है। पूरे फसल चक्र पर ही असर पड़ने लगा है। तेज हवा की वजह से मूंग, बाजरा और तिल की खड़ी फसलें तबाह हो रही हैं।

राजेश : यही तो कह रहा हूं कि धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। बारिश, आंधी, तूफान सभी का पैटर्न बदल रहा है। मौसम के आंकड़े बताते हैं कि सन दो हजार सोलह के जैसी भीषण बारिश यहां सौ वर्षों के बाद हुई है।

महेंद्र : अजीब बात है। पहले तो लबालब भरे तालाबों को देखकर मन खुश हो जाता था लेकिन अब यही पानी परेशानी का कारण बन रहा है। सभी सूरज ने सताया और अब ये बारिश सता रही है। आखिर ऐसा होने की वजह क्या है ? हमने ऐसा कुछ गलत तो किया नहीं शायद ?

राजेश : इसमें सिर्फ आपकी कोई गलती नहीं। बल्कि ये तो पूरी दुनिया में बदलती हुई जलवायु का एक नमूना भर है।

मीना : बदलती जलवायु का नमूना ? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया।

सविता : अरे काकी, मैं बताती हूं। हमारी धरती साल दर साल ज्यादा गर्म होती जा रही है। और इस बढ़ती हुई गर्मी की वजह से दुनिया भर के मौसम में भी बदलाव आ रहा है। ना बारिश का ठिकाना और ना सूखे का। मैंने सही कहा ना सर ?

राजेश : बिल्कुल सही कहा। आप तो..

.

महेंद्र : जी, ये मेरी बेटी है। कॉलेज में पढ़ती है। आज छुट्टी की वजह से गांव आई हुई है।

राजेश : अच्छा... अच्छा।

मीना : देखो, जलवायु परिवर्तन वाली बात मेरी तो समझ में अब भी नहीं आई लेकिन अपने अनुभव के हिसाब से मैं ये कह सकती हूं मौसम तो लगातार बदल ही रहा है, खासतौर पर इसका गुस्से वाला रूप अब ज्यादा नजर आ रहा है।

राजेश : बिल्कुल। राजस्थान के जो इलाके सूखे रहा करते थे वहां भी अब अक्सर बाढ़ तबाही मचा रही है। चाहे वो सन दो हजार छे की बाढ़ हो, सन दो हजार पंद्रह की बाढ़ हो, सोलह की या फिर दो हजार सत्रह की हो। आमतौर से इलाके बाढ़ के लिए नहीं जाने जाते थे लेकिन अब यहां भी बाढ़ बार बार और ज्यादा इलाके में आ रही है। ... आप शायद कुछ कहना चाह रहे हैं?

सूरज : जी..... मेरा नाम सूरज है। मैं तो कहता हूं कि हम लोग गर्मी को तो झेल सकते हैं लेकिन बाढ़ को नहीं। और ऐसा लगातार हो रहा है।

महेंद्र : तुमने ठीक कहा सूरज। भीषण बाढ़ वगैरह की तो हम लोग कोई चिंता ही नहीं करते थे। अब तो डर लगता है कि किसी दिन यहां भी बादल ना फट पड़े।

राजेश : देखिये, डरने की नहीं लेकिन सतर्क रहने की जरूरत है। बादल फटने की ज्यादातर घटनाएं हिमालयी क्षेत्रों में ही देखी गई हैं लेकिन कुछ मामले मैदानी इलाकों में भी हुए हैं।

सूरज : सर, सन दो हजार तेरह में तो उत्तराखंड में बादल फटने से काफी तबाही हुई थी ना ?

राजेश : हां। जून सन दो हजार तेरह में आई केदारनाथ आपदा को भारतीय इतिहास की सबसे भयानक बाढ़ माना जाता है। वहां बादल फटने के बाद आई बाढ़ में साढ़े पांच हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी। देश में एक सीमित दायरे में बाढ़ की वजह से मरने वालों का ये सबसे बड़ा आंकड़ा है।

मीना : ये तो बड़ी ही डरावनी स्थिति है। मैंने सुना है कि पहाड़ी इलाकों में पहले भी बारिश तो हुआ करती थी और वो काफी दिनों तक भी चलती थी। लेकिन इतने भारी नुकसान की बात हमने तो कभी नहीं सुनी।

सविता : काकी। इस तरह से अचानक तेज बारिश, आंधी और ओलावृष्टि की घटनाएं तो हाल के वर्षों में ही ज्यादा बढ़ी हैं। और इनकी वजह से नुकसान भी काफी हुआ है। हालांकि ऐसी घटनाएं पहले भी हुई हैं। 15 अगस्त 1997 को हिमाचल जिले के चिरगांव में बादल फटा था जिसमें डेढ़ हजार लोगों की मौत हो गई थी।

राजेश : बिल्कुल सही बात...। दरअसल अगर हम पिछले कुछ वर्षों में अचानक तेज बारिश और उससे आई बाढ़ को देखें तो इस तरह की घटनाएं बार-बार भी हो रही हैं और ज्यादा खतरनाक भी। सन 2018 में अगस्त के महीने में केरल की बाढ़ भी काफी भयानक थी।

सूरज : जी, मैंने खबरों में सुना था कि इस बाढ़ की वजह से पांच सौ से ज्यादा लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी और लाखों लोग अपने घरों को छोड़ने पर मजबूर हुए।

राजेश : हां, आठ अगस्त दो हजार अठारह को बारिश शुरू हुई जो कि अगले दस दिनों तक नहीं रुकी। इस दौरान बादलों ने सामान्य से करीब ढाई गुना ज्यादा पानी बरसाया। बाढ़ की वजह से केरल में बिजली, पीने के पानी और यातायात की सुविधाएं ध्वस्त हो गईं थीं। प्रभावित लोगों के लिए दो हजार से ज्यादा अस्थायी राहत शिविर बनाए गये थे।

सूरज : ओह...। ये तो बड़ी भारी मुश्किल हुई।

राजेश : बिल्कुल, लेकिन इस बाढ़ से ना सिर्फ जान-माल का नुकसान हुआ बल्कि कुदरती संसाधन भी प्रभावित हुए। पश्चिमी घाट के उन इलाकों में भी काफी तबाही हुई जो कि इको-सेंसटिव ज़ोन (Eco-sensitive Zone) में आते हैं। और.. करीब सौ वर्षों पहले सन उन्नीस सौ चौबीस (1924) में भी केरल में काफी भीषण बाढ़ आई थी और तीन हफ्तों तक तबाही का आलम रहा।

मीना : साहब, मतलब ये हुआ कि अब राजस्थान में भी हमें ऐसे हालात के लिए तैयार रहना होगा ?

राजेश : देखिये, ऐसी तो कोई बात नहीं... लेकिन इतना तय है कि अब मौसम कब अचानक से गुस्सा हो जाए, कहा नहीं जा सकता। हम मौसम के सिर्फ पिछले इतिहास के आधार पर ही कोई राय नहीं बना सकते हैं। पिछले कुछ सालों में अचानक आई तेज बारिश और बाढ़ की बात करें तो हमारे सामने ऐसी बहुत सारी घटनाएं हैं।

मीना : बहुत सारी घटनाएं ?.. जैसे ?

राजेश : सन दो हजार पांच में महाराष्ट्र के कई इलाकों में भारी बारिश से जान-माल का काफी नुकसान हुआ था। अकेले मुंबई में ही चार सौ से ज्यादा लोगों की जान चली गई थी। ऐसा नहीं कि बारिश का ये रूप सिर्फ मैदानी इलाकों में ही दिखा बल्कि हिमालयी इलाकों में भी नजर आया है। जैसे लेह को आमतौर से कम बारिश वाला इलाका माना जाता है। यहां सन 2010 के अगस्त में आई बाढ़ ने भी काफी तबाही मचाई थी जिसमें ढाई सौ से ज्यादा लोगों की जान चली गई।

सविता : सर, लेह को तो हमारे देश का ठंडा रेगिस्तान कहा जाता है।

राजेश : हां सविता। इसके अलावा सन दो हजार बारह (2012) में असम में ब्रह्मपुत्र की बाढ़, सन दो हजार चौदह में जम्मू कश्मीर और सन दो हजार चार में बिहार में आई बाढ़ ने भी काफी नुकसान पहुंचाया।

सविता : सर, सन दो हजार पंद्रह में दो और तीन दिसंबर को चैन्नई में आई बाढ़ भी तो काफी भयानक थी।

राजेश : हां। इस दौरान चैन्नई में पिछले सौ वर्षों में सबसे ज्यादा बारिश रिकॉर्ड की गई। इस बाढ़ की वजह से ढाई सौ से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी। दरअसल पिछले कई वर्षों से ऐसा देखा जा रहा है कि बारिश की प्रवृत्ति में बदलाव आया है और ये जून के बजाय और आगे के महीनों जैसे अगस्त, सितंबर में ज्यादा हो रही है। और ये बदलाव हाल के वर्षों में ही देखा जा रहा है।

महेंद्र : डॉक्टर साहब, लेकिन हमने तो ये भी देखा है कि जिस तेजी से बारिश का रुख बदला है, वैसे ही गर्मी का मौसम भी ज्यादा ही कहर ढा रहा है। सर्दियों की तुलना में गर्मियां कुछ ज्यादा ही लंबी होने लगी हैं।

राजेश : आपने बिल्कुल सही बात कही प्रधान जी। पिछले पचास वर्षों में लू यानी गर्म हवाओं का कहर भी कुछ ज्यादा ही तेज हुआ है और इनमें ढाई गुना तक बढोतरी देखी गई है। सन दो हजार पंद्रह में हमारे देश में भीषण गर्मी और लू की वजह से दो हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी।

महेंद्र : हां, मुझे याद है...। उन दिनों तेज गर्मी और गर्म हवाओं से ना सिर्फ इंसानों, बल्कि पशु-पक्षियों को भी काफी मुश्किलें पेश आईं।

राजेश : हमारे देश में सन 2016 में भी गर्म हवाओं की वजह से एक हजार से ज्यादा लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। तब सिर्फ तेलंगाना में ही अप्रैल और मई महीनों में करीब तीन सौ लोगों की मौत हो गई थी। इन गर्म हवाओं का सबसे ज्यादा असर दक्षिण भारत, मध्य भारत और पश्चिमी भारत में हुआ। इसके अलावा सन दो हजार सोलह 2016 तो अब तक का सबसे ज्यादा गर्म साल रहा।

महेंद्र : (चौंकते हुए) अच्छा !

राजेश : एक अहम बात ये है कि भारत में अब तक का सबसे गर्म दशक भी पिछला ही रहा है। सन दो हजार सात (2007) से सन दो हजार अठारह (2018) के दौरान सबसे ज्यादा गर्मी दर्ज की गई है।

मीना : डॉक्टर साहब, हमारे गांव में जैसी आंधी कल शाम आई, वो भी कोई कम खतरनाक तो है नहीं ?

राजेश : सही कहा आपने। हाल के वर्षों में ऐसी अचानक आने वाली आंधियों की संख्या में भी काफी इजाफा हुआ है। अभी हाल की बड़ी घटनाओं में सन दो हजार अठारह (2018) में मई की शुरुआत में आई आंधी को रख सकते हैं।

महेंद्र : हां डॉक्टर साहब, वो आंधी तो शायद हमारे राज्य से शुरू होकर ही हरियाणा और उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ी थी।

राजेश : बिल्कुल सही कहा प्रधान जी आपने। दो मई सन दो हजार अठारह को शुरू हुई उस आंधी से उत्तर भारत में सौ से ज्यादा लोगों की जान चली गई और काफी संपत्ति का नुकसान भी हुआ। ये तेज हवाएं हालांकि ज्यादा वक्त तक नहीं रहतीं लेकिन नुकसान बहुत कर जाती हैं। सन 2018 में देशभर में धूलभरी आंधी चलने की करीब पचास घटनाएं हुईं जिसमें 500 से ज्यादा लोगों की जान गईं। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि इसकी तुलना में 2003 से 2017 के बीच ऐसी आंधी की बाइस (22) घटनाएं हुईं थीं।

मीना : यानी, आंधियां भी लगातार बढ़ रही हैं। कल हमारे गांव में आई आंधी और ओलों ने तो बहुत नुकसान पहुंचाया है। हमें कुछ मदद भी मिलेगी या नहीं ?

महेंद्र : हां.. हां.. । मदद जरूर मिलेगी। (संबोधन के अंदाज में) देखिए। आप सभी सभी लोग अपनी खेती और मकानों को हुए नुकसान की दरख्वास्त लिख लीजिए। हम उन सबको ब्लॉक और तहसील में भिजवा देंगें। जो लोग लिख कर लाए हैं, वो मेरे पास जमा कर दीजिए।

(भीड़ का शोर)

महेंद्र : डॉक्टर साहब। आपसे मिलकर आज हमें बहुत कुछ जानने को मिला। चलिये, चाय तैयार है। चाय लेते हैं।

राजेश : जी.. प्रधान जी... ठीक है।

सविता : पापाजी, आप लोग चाय पीजिए। मैं घर चलती हूं। ... और सर..। मेरे मन में अब भी बहुत सारे सवाल हैं। आपके पास वक्त हो तो मैं कल विज्ञान केंद्र में आकर आपसे मिल हूं।

राजेश : हां... हां... क्यों नहीं। कल दोपहर बाद किसी भी वक्त आ जाओ।

सविता : ठीक है सर, अभी मैं चलती हूं, नमस्ते।

(SCENE -3)

SCENE TRANSITION MUSIC

(विज्ञान केंद्र का कैंपस / शाम का वक्त / चिड़ियों की आवाज़ / पदचाप)

सविता : पापाजी, आप तो यहां इससे पहले भी आ चुके होंगे ?

महेंद्र : हां बेटी, यहां तो आना-जाना लगा रहता है।

सविता : वो देखिये, डॉक्टर राजेश। शायद हमारा ही इंतजार कर रहे हैं।

महेंद्र : (ऊंचे स्वर में) नमस्कार डॉक्टर साहब।

राजेश : (कुछ दूर से आती आवाज़) नमस्ते प्रधान जी...। आइए... आइए..।

(पदचाप)

सविता : नमस्ते सर।

राजेश : आइये.. आइये...। मैं इंतजार ही कर रहा था। बैठिये आप दोनों।

(कुर्सियां खिसकाने की आवाज़)

राजेश : आप क्या पूछना चाह रही थी।

सविता : सर, ये बात तो मेरी समझ में आ गई कि पिछले कई वर्षों में मौसम में अचानक से बदलाव आने की घटनाएं... मतलब एक्सट्रीम वैदर इवेंट्स (extreme weather events) काफी ज्यादा बढ़े हैं। चाहे वो तेज बारिश हो, बादल फटना हो, आंधी हो या फिर गर्म हवाओं का कहर।

राजेश : बिल्कुल सही बात।

सविता : लेकिन सर। अगर हमारे राजस्थान के सूखे इलाकों में बारिश और बाढ़ की घटनाएं बढ़ रही हैं तो क्या ये हमारे लिये अच्छा नहीं है ? इससे इन सूखे इलाकों में हरियाली ही तो बढ़ेगी ना ?

महेंद्र : बेटी, मैं भी कल यही सोच रहा था, लेकिन पूछ ना सका।

राजेश : देखो सविता। तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन इसे कुछ इस तरह से सोचो।

रेगिस्तानी क्षेत्र में बाढ़ की बढ़ती घटनाओं से नमी तो बढ़ेगी लेकिन वो वनस्पतियां खत्म होने लगेंगी जो सूखे में ही उगती हैं। जैसे जोधपुर के फलौदी में सात मई सन 2015 को पारा 47 डिग्री तक पहुंच गया था। अब इतनी तेज गर्मी में उगने वाली वनस्पतियां, कीड़े मकौड़े क्या तेज बारिश और नमी को झेल सकेंगे।

महेंद्र : आप बिल्कुल सही कह रहे हैं डॉक्टर साहब। मैंने भी गौर किया है जबसे इस इलाके में बरसात बढ़ी है, आसपास के हिरण भी काफी कम हो गये हैं। पता नहीं कहां चले गये ?

राजेश : दरअसर वो हिरण सूखी धरती पसंद करते हैं। लगातार बारिश और बाढ़ ने उनके इलाके को दलदल में तब्दील कर दिया जिससे उन हिरणों ने ये इलाका ही छोड़ दिया है।

सविता : हां, ये तो उनके लिए काफी मुश्किल होगा। मतलब ये हुआ कि इस सबका असर पूरे इकोसिस्टम पर पड़ रहा है। मैंने पढ़ा था कि ऐसा सिर्फ हमारे देश में ही नहीं हो रहा है बल्कि दुनियाभर में एक्सट्रीम वैदर (extreme weather) की घटनाएं बढ़ी हैं। और शायद इस सबके पीछे की वजह जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वॉर्मिंग को भी माना जा रहा है।

राजेश : दरअसल, ऐसी घटनाओं को सिर्फ देखकर यह अंदाजा नहीं लगाया जा सकता कि इनकी वजह जलवायु परिवर्तन है या फिर मौसम की स्थानीय स्थिति।

सविता : लेकिन सर, जबसे धरती के तापमान में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है, तभी से तो ऐसी घटनाएं भी बढ़ी हैं ?

राजेश : हां, ये बात सही है... और काफी हद तक ग्लोबल वॉर्मिंग और एक्सट्रीम वैदर इवेंट्स (extreme weather events) का संबंध स्थापित भी हुआ है।

सविता : वो कैसे।

राजेश : जैसे.... आप बादल फटने या फिर बेमौसमी तेज बारिश को ले लीजिए। बारिश के लिए बादलों का होना जरूरी है। बादल किसी खास इलाके और दुनिया की जलवायु प्रणाली के बीच एक दूत की तरह काम करते हैं। तुमने वेस्टर्न डिस्टर्बेन्स (western disturbance) यानी पश्चिमी विक्षोभ को बारे में तो सुना ही होगा। ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से पश्चिमी विक्षोभ का व्यवहार बदला है और उसका असर भारत के मौसम पर पड़ता है।

महेंद्र : जी, डॉक्टर साहब। मौसम के समाचारों में अक्सर ये शब्द सुनाई देता है। लेकिन इसका क्या मतलब है और इसका हमारे देश के मौसम से इसका क्या लेना - देना।

राजेश : मैं समझाता हूं। पश्चिमी विक्षोभ एक तरह का उष्णकटिबंधीय तूफान) Tropical storm (है। ये तूफान कैस्पियन सागर से गुजरता हुआ भारत में पहुंचता है। इन हवाओं की वजह से कुछ वक्त के लिए मौसम की स्थितियां बदल जाती हैं।

सविता : लेकिन सर, ग्लोबल वॉर्मिंग से इसका क्या संबंध।

राजेश : हां, इसका सबंध है। दुनिया में तापमान की बढ़ोतरी का असर आर्कटिक की जलवायु पर भी पड़ा है और उससे western disturbance का व्यवहार भी बदला है। पहले तक एक साल में दो या तीन बार western disturbance आते थे लेकिन हाल के वर्षों में इनकी संख्या यानी आवृत्ति लगातार बढ़ी है। पहले तक ये हवाएं आमतौर से सर्दियों में आती थीं और हिमालयी क्षेत्रों में बारिश की वजह बनती थीं। लेकिन अब ये हवाएं अप्रैल, मई या जून में भी आ रही हैं। और इसका नतीजा तुम देख ही रही हो।

सविता : मतलब ये हुआ कि गर्म होती धरती ने western disturbance की चाल ढाल को बदल दिया है। और उससे हमारे देश में मौसम में अचानक बदलाव की घटनाएं भी बढ़ी हैं।

राजेश : बिल्कुल। ये काफी हद तक सही है। और यह सब सिर्फ बादल फटने, गर्म हवा या आंधी-तूफान तक ही सीमित नहीं है। हिमालयी क्षेत्रों में कई बार असामान्य रूप से काफी ज्यादा या बहुत कम बर्फबारी की घटनाएं भी देखने को मिल रही हैं।

महेंद्र : लेकिन डॉक्टर साहब बेमौसम की बारिश पहले भी होती थी और बाढ़ भी कभी-कभार आ ही जाती थी।

राजेश : आपका कहना सही है प्रधान जी। लेकिन पिछली सदी के शुरुआती सालों की तुलना में इस सदी में एक्स्ट्रीम वैदर की घटनाएं बढ़ी हैं। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि अचानक मौसम बदलने की इन घटनाओं में सौ गुना तक की बढ़ोतरी हुई है। मतलब ये कि जलवायु परिवर्तन का असर ज्यादा तेजी से नजर आ रहा है।

महेंद्र : तो अब हम ऐसा क्या करें कि हमें इन कुदरती मुश्किलों से ना जूझना पड़े ?

राजेश : देखिये, ऐसा कुछ करना तो संभव नहीं है कि तुरंत राहत मिल जाए। क्योंकि ग्लोबल वॉर्मिंग तो पिछले सौ से ज्यादा वर्षों में हुई लापरवाही और संवेदनहीनता का नतीजा है। बस, हम ऊर्जा संरक्षण, जल संचय के प्रभावी तरीके अपनाकर भविष्य के नुकसान को कुछ कम कर सकते हैं। अगर धरती का तापमान इसी तरह से बढ़ता रहा तो मौसम का गुस्सा भी हमें झेलना ही पड़ेगा।

महेंद्र : कुछ ना कुछ तो करना ही पड़ेगा। आखिर इससे हमारी खेती-बाड़ी और पशु पालन पर भी असर पड़ रहा है। राजस्थान देश में दूध का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और लगातार गर्मी बढ़ने की वजह से दूध का उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है।

राजेश : बिल्कुल सही बात है। पहले तक बारिश का जो मौसम आमतौर से चार महीने तक चलता था वो अब छोटा हो गया है। अब कम दिनों में ज्यादा बारिश हो रही है।

महेंद्र : कुल मिलाकर ये कहें कि गर्म होती धरती ने कुदरत की लय बिगाड़ दी है।

राजेश : और इस बिगड़ी हुई लय को सुधारने की जिम्मेदारी भी हम सबकी ही है।

(बादलों की गर्जना सुनाई देती है)

सविता : पापाजी, आज फिर से मौसम खराब हो रहा है। चलिए घर चलते हैं। कहीं ऐसा ना हो कि हम भी आंधी में फंस जाएं। आपका बहुत धन्यवाद सर..। आपने इतना वक्त दिया।

राजेश : ठीक है...ठीक है। मुझे भी कुछ काम निपटाने हैं। अपना लोग अपना ध्यान रखियगा।

(बादलों की गर्जना सुनाई देती है)

Closing Music